**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

# उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्ता

**DR. LATA**

**G.G.I.C SHRINGAR GARHWAL**

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति वहां के निवासियों व भौतिक पर्यावरण के बीच अन्तर्क्रिया से एक लम्बे समय की अवधि में विकसित होती है और निरन्तर परिवर्तनशील रहती है।

उत्तराखण्ड 9 नवम्बर 2000 को देश के 27 वें राज्य के रूप अस्तित्व में आया। कई बरसों की साधना, संघर्ष और कुर्बानी के बाद यह एक अलग राज्य बना। उत्तराखण्ड राज्य की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है, जो उसे अन्य प्रदेशों से पृथक करती है। गौरवशाली हिमालय मे विभूषित देवभूमि के नाम से प्रसिद्व यह राज्य सदियों से धर्म, आस्था और प्रेम का प्रतीक रहा है। यहां के पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों का जीवन प्रकृति से इतना निकट है। कि सामाजिक अपराधों की शून्यता दिखायी पड़ती है। सूदूर पर्वतीय क्षेत्रों के ग्रामीणों की सरल हृदयता, श्रमशील नारी की छवि मन को प्रभावित करती है। यहां के लोक गीत, संगीत, कलाऐं, त्यौहार व मेले आदि सृष्टि के कण–कण को गतिमान कर देते हैं।

युगो–युगो से इस क्षेत्र की प्रसिद्वि का मुख्य कारण है कि यह प्रदेश गंगा, यमुना और अनेक सहायक गंगाओं का स्रोत है।

इस परिपक्ष्य में एक न्यूलो (विरह गीत) बहुत प्रसिद्व है।

हिमालैय का ऊंचा छाना, पड़ी रे बरफ
पंछी हूनी उड़ी अनी, मै तेरी तरफ

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

नी बांसा घूघूती डाना, नी बांज्या मूरूली

घस्यारयों की न्यूली सूणी, मन भरी जा छः

गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ के प्रसिद्व तीर्थो के गढ़वाल में होने से तथा जागेश्वर, नन्दादेवी और मानसरोवर के सरल यात्रापथ कुमांऊ में होने से प्रत्येक यात्री को इन दोनों संभागो से होकर आना जाना पड़ा। इस प्रक्रिया में कालान्तर में स्थित इस खण्ड विशेष की परिक्रमा प्रत्येक थाली का लक्ष्य हो गया।

संस्कृति का सम्बन्ध मनुष्य के भावों विचारों, संस्कारों और संवेदनाओं से है, माना गया है कि संस्कृति, सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश पर विजय पाने का साधन है।

उत्तराखण्ड़ की सांस्कृतिक पहचान यहां के तीर्थ, त्यौहार, मेले वेशभूषा, पहनावा, वाद्य यंत्र, लोककला, चित्रकला, काष्टकला, लाकगीत, लोकनृत्य से है और इसी सभी चीजों से इसकी सामाजिक महत्ता महत्वपूर्ण है।

**उत्तराखण्ड के तीर्थ**

(1) यमुनोत्री

(2) गंगोत्री

(3) केदारनाथ

(4) बद्रीनाथ

**उत्तराखण्ड के प्रमुख त्यौहार**

(1) घुघुतिय (3) गंगा–दशहरा (5) घी–सक्रांति

(2) हरेला (4) फूल सग्रांद (6) बसंत–पंचमी

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

(7) आंठू (8) बैसी (9) अड़ूडी

(10) जागड़ा (11) चैतोल (12) होली

(13) शिव रात्रि (14) दीपावली (15) हिल–जात्रा

(16) द्रयोवरा (17) जेठ–पुजाई

## उत्तराखण्ड के प्रमुख मेले

(1) गढ़केदार का मेला

(2) स्याल्दे–विखोती का मेला

(3) बैंकुण्ठ चतुर्दशी मेला

(4) नन्दा राजजात

(5) कुम्भ पर्व

(6) झंडे का मेला

(7) जौल जीवी का मेला

(8) मानेश्वर का मेला

(9) चैती का मेला

(10) गिर का मेला

(11) देवीधुरा का मेला

(12) गिन्दी मेला

(13) उत्तरायणी मेला

(14) भद्रराज का मेला

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

(15) गेंदी का खकोटी मेला

(16) बिस्सु मेला

(17) नुणाई का मेला

(18) गौचर मेला

(19) मियों का मेला

(20) बूंखाल कालिका मेला

(21) मछमौण

**फुया बेल**– भोटिया महिलाओ द्वारा कमर से नीचे तक का कुर्ता जिसे आकर्षक ऊनी पट्टी से बांधा जाता है।

**लबा**– भोटिया महिलाओं का कन्धों से कमर तक लटका हुआ एक विशिष्ट वस्त्र।

**लड़वा**– ऊन से कमर के नीचे लपेटकर पहने जाने वाला वस्त्र

**पंगरी**– आठ से दस हाथ लम्बा सूती कपड़ा जिसे लडवा, पाघरी के ऊपर कमर से लपेटकर बांधते हैं।

**सोन्तुणु**– एक प्रकार का ऊनी कोट व ऊनी पाजामा।

**सिकोली**– एक प्रकार की ऊनी टोपी।

**चोल्टी**– कुर्ते के बाहर पहनने वाली एक प्रकार की ऊनी चोली।

**वपकन**– घुटनो से थोड़ा ऊंचा गर्म चोगा।

**कौलक**– स्त्रियों द्वारा पहनने वाला पैरों तक लत्बा चोगा।

**केरक**– कमर में लपेटने वाला एक कपडा।

**चुंड**– महिलाओं का एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

**आभूशण**

**बुजनी**– कान के कुण्डल।

**युलांक**– सोने से बना एक गहना जो नाक पर पहना जाता है।

**तिलहरी**– गले में पहनने वाला आभूषण।

**पौंटा**– एड़ी से पैर के ऊपरी भाग तक पहनने वाला आभूषण।

**मुनाड़**– सोने से बना गहना जो कान में पहना जाता है।

**झांवर**– चांदी से बना पैर में पहना जाने वाला गहना।

**स्यूण–सांगल**– चांदी से बना जो कंधों पर पहना जाता है।

**नथुली/नथ**– विवादित महिलाओं द्वारा नाक में पहनने वाला आभूषण।

**धागुला**– चांदी के बने हुए जो हाथ में पहने जाते है।

**हंसुला**– विवाहित स्त्रियों द्वारा गले में पहना जाता है।

**चन्द्रहार**– यह गले का हार है।

**सीसफूल**– माथे का आभूषण।

**पवल्या**– चांदी से बना पैर की अंगुलियों में पहनने वाला बिछुवा।

**गुलबंद**– गले का आभूषण।

**प्रमुख वाद्य–यंत्र**

(1) ढोल

(2) विणाई

(3) हुड़का

(4) मोचंग

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

(5) नगाड़ा

(6) मसकबीन

(7) तुरई

(8) रणसिंघा

## लोककला

(1) ऐंपण

(2) ज्यूंति पटटा

(3) पिछोड़ा

(4) डिकारे

## चित्रकला भौलीयां

(1) सिद्व शैली

(2) देवशैली

(3) लौकिक शैली

## काश्ट कला

(1) बांस

(2) ऊनी वस्त्र एवं कालीन बनाना

(3) बर्तन निर्माण कला

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

(4) मृतित्रका शिल्प

(5) चर्म शिल्प

(6) संगतराशी

**प्रमुख लोकगीत**

(1) मांगल गीत

(2) विवाह गीत

(3) बाजूबन्द

(4) झुमैलो गीत

(5) खुदेड़ गीत

(6) बसन्ती गीत

(7) घेरी

(8) कुलाचार

(9) बारहमासा

(10) चौमासा गीत

(11) चौफला गीत

(12) ऋतु गीत

(13) कृषि गीत/हुड़के के गीत

(14) नृत्य प्रधान गीत

(15) तर्क प्रधान गीत

(16) छोपती गीत

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

**प्रमुख लोकनृत्य**

(1) झोड़ा नृत्य

(2) चौफला नृत्य

(3) थड़िया

(4) झुमैलो

(5) सरौ या छोलिया नृत्य

(6) चंचरी नृत्य

(7) हुड़का नृत्य

(8) पोणा नृत्य

गायन शैलीयों और नृत्य शैलीयों में उत्तराखण्ड के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का सजीव चित्रण हुआ है। इनके आधार पर उत्तराखण्डी समाज का सामाजिक सम्बन्धों पर व्यक्त दृष्टिकोण हृदयग्राही है।

**सन्दर्भ**

(1) उत्तराखण्ड की संस्कृति पृष्ठ सं0 (5) भारतखण्डे संगीत महाविद्यालय पौड़ी से उपलब्ध

(2) डबराल शिव प्रसाद (उत्तराखण्ड का इतिहास भाग–1 पृष्ठ सं0 34